खर्च होने वाले हैं ? मेरा कहने का मतलब यह है कि जो इन्कम्पलीट प्रोजैक्ट्स हैं, उन पर भी खर्च होने वाले हैं ।

Shri Alagesan: I did not follow the question.

Shri Bade: May I explain in English?

Mr. Speaker: This is his choice. I would not ask him to do so.

श्री बड़े : यह जो १६० करोड़ रुपया खर्च होने वाला है वह नई प्रोजैक्ट्स पर खर्च होने वाला है । या जो इनकम्पलीट प्राजैक्ट्स हैं, उन पर भी खर्च होने वाला है । चम्बल प्रोजैक्ट एक ऐसा प्रोजैक्ट है जो अभी पूरी नहीं हुई है और वहां पर एक लाख रोज का नुकसान हो रहा है क्योंकि केबल्ज और वायर्ज नहीं मिली हैं।

Mr. Speaker: Chambal project is suffering and is incurring a loss of Rs. 1 lakh a day and it is not being completed. Whether that aspect is also being considered in order to complete those projects that are in progress and have not been completed instead of taking up new projects—that is the question.

Shri Alagesan: The Chambal project has been completed. There is only one unit which has to be commissioned. That also will be commissioned shortly.

Shri Bade: My question was different. Government is suffering a loss of Rs. 1 lakh daily due to loss of power because there is shortage of cables and wires. Is the Government going to spend out of this Rs. 160 crores on this Chambal project or also on other projects which are not completed?

Shri Alagesan: It is not correct to say that the project is suffering a loss of Rs. 1 lakh every day for want of transmission lines. The entire power that is produced is being utilised both in Madhya Pradesh and in Rajasthan.

राष्ट्रीय रक्षा कोष

*१६१. श्री प्रकाशवीर शास्त्री :
श्री जगदेव सिंह सिद्धांती :
डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री म० ला० द्विवेदी :
श्रीमती सावित्री निगम :
श्री स० चं० सामन्त :
श्री श्रीनारायण दास :
श्री विभूति मिश्र :
श्री गुलशन :
श्री भक्त दर्शन :
श्री भागवत झा आजाद :
श्री रा० स० तिवारी :
श्री हेम राज :
श्री विद्याचरण शुक्ल :
श्री ब्रजराज सिंह :
श्री गोकर्ण प्रसाद :
श्री यशपाल सिंह :
श्री रघुनाथ सिंह :
श्री मुहम्मद इलियास :
श्री बैरवा कोटा :
श्री मरंडी :

क्या वित्त मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) राष्ट्रीय रक्षा कोष में अब तक कुल कितना धन तथा सोना आ चुका है;

(ख) क्या इस रक्षा कोष में परोक्ष दबाव डाल कर धन एकत्रित करने की भी सूचनायें सरकार को मिली हैं ;

(ग) यदि हां, तो क्या इस सम्बन्ध में कोई निर्देश जारी किये गये हैं; और

(घ) इस रक्षा कोष का राज्यों में अभी कितना धन बकाया है क्या इस की भी कोई जानकारी प्राप्त की गई है ?

The Deputy Minister in the Ministry of Finance (Shri B. R. Bhagat): (a) Rs. 45.28 crores and 15,67,169 grammes upto 23rd February, 1963.

(b) and (c). Generally, contributions have been made voluntarily, with the free and willing consent of the donors. In a few cases, where complaints to the contrary have been received, the matter was brought to the notice of the State Governments concerned. Suitable instructions have also been issued for the guidance of the State Governments.

(d) According to the prescribed procedure, all collections made within a State are required to be remitted for credit to the Central Account through the Branch Account of the Fund at each State headquarter at the end of every day. Small imprests are allowed to be kept with the States for meeting the costs of collection and other emergent needs.

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : अध्यक्ष महोदय, मैं आप से निवेदन करना चाहता हूं कि मूल प्रश्न हिन्दी में है और माननीय मंत्री जी भी हिन्दी जानते हैं। अगर वे इस उत्तर को हिन्दी में भी सुना दें तो बड़ी कृपा होगी।

श्री ब० रा० भगत : (क) २३ फरवरी, १९६३ तक ४५.२८ करोड़ रुपया और १५,६७,१६९ ग्राम सोना इकट्ठा हो चुका था।

(ख) और (ग). आम तौर पर लोगों ने रक्षा कोष में अपनी इच्छा से और किसी दबाव के बिना धन दिया है। इस के विपरीत कुछ मामलों में शिकायतें मिली हैं और उन के बारे में सम्बद्ध राज्य सरकारों को सूचना दे दी गयी है। राज्य सरकारों के मार्गदर्शन के लिये उचित हिदायतें भी जारी कर दी गयी हैं।

(घ) इस के लिए जो तरीका निर्धारित किया गया है उस के अनुसार किसी राज्य में इकट्ठा किया गया धन हर रोज के आखिर में, कोष के शाखा खाते के जरिये, जो राज्य के सदर मुकाम में होता है केन्द्रीय खाते में जमा करने के लिये भेजना पड़ता है। राज्यों को धन इकट्ठा करने के खर्च और अन्य आकस्मिक आवश्यकताओं के लिये थोड़ी सी रकमें रखने की इजाजत दी गयी है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : जनता ने सुरक्षा कोष में जो धन दिया है उसका उद्देश्य जवानों को अधिक से अधिक सुविधायें देना और आधुनिकतम हथियारों को मंगा कर जवानों को उन से लैस करना था। क्या मैं जान सकता हूं कि इन दोनों कार्यों को पूरा करने के लिये वित्त मंत्री ने कितना कितना पैसा दिया है और उसका प्रकार क्या रखा है।

श्री ब० रा० भगत : अभी उसके बारे में कोई बात तय नहीं हुई। अभी उस से कोई खास रुपया खर्च भी नहीं हुआ है। थोड़ा बहुत रुपया राज्य सरकारों के पास है। वह रुपया जो हमारे सिपाही मारे गए हैं उन के परिवारों के लिए या जो आम सिपाही हैं उन के परिवारों की भलाई की मद के लिये दिया गया है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : क्या मैं जान सकता हूं कि जब से यह स्वर्ण अधिनियम जारी किया गया है उस से पहले राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में सोना आने का जितना अनुपात था वह उस अधिनियम के लागू होने पश्चात् कुछ कम हो गया है? यदि हां, तो पहले उस का प्रतिशत क्या था और अब किस प्रतिशत से सोना आ रहा है?

श्री ब० रा० भगत : इस अधिनियम से सोने का कोई सम्बन्ध नहीं है। आम तौर से जो उत्साह शुरू में होता है वह बहुत दिनों तक कायम नहीं रहता है। वह धीरे-धीरे कम होता है। लेकिन सोना अधिनियम जारी होने के पश्चात् भी गोल्ड बांड्ज में बहुत सोना इकट्ठा हुआ है।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री मेरा प्रश्न यह है ....

अध्यक्ष महोदय : आप का प्रश्न तो बहुत साफ है लेकिन मंत्री महोदय कहते हैं कि इस का जवाब देना कि गोल्ड रूल्स

बनने का उस पर कितना असर हुआ और सोना आना कितना कम हो गया, बहुत मुश्किल है ।

श्री प्रकाशवीर शास्त्री : इतना तो बतलाया जा सकता है कि इस अधिनियम के लागू होने से पहले जो सोना आ रहा था उस का प्रतिशत इतना था और इस अधिनियम के लागू होने के पश्चात् जो सोना आया उस का प्रतिशत इतना है । यदि इतना ही बतला दिया जाय तो ठीक है ।

अध्यक्ष महोदय : अगर इस चीज को इस से सम्बद्ध करते हैं कि उस की वजह से कमी हुई है तो मंत्री महोदय इस को नहीं मानते हैं ।

Dr. L. M. Singhvi: May I know whether any cases of collection under indirect pressure were investigated, and if so, whether the investigations have been concluded? What are the results of these investigations?

Shri B. R Bhagat: As I said in my answer, we received some reports.

Mr. Speaker: The question whether any investigation has been made or concluded.

Shri B. R. Bhagat: Not from here, but we have brought those cases to the notice of the State Governments who have taken suitable action.

श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती : सुरक्षा कोष में धन आया है वह मुख्य रूप से जवानों के लिए और हथियारों के लिए हैं । मंत्री महोदय कृपा कर के यह बतलायें कि उस में से हथियारों के लिए कितना धन खर्च किया गया है ।

अध्यक्ष महोदय : वह कहते हैं कि अभी खर्च नहीं किया गया है ।

Shri S. M. Banerjee: I would like to know whether it is a fact that the main contribution towards the National Defence Fund has come from the low income group, and if so, what effective steps have been taken by Government to compel the big business houses to contribute more liberally?

Mr. Speaker: On the one side compulsion is being deprecated; on the other side, it is said that should be compelled.

Shri S. M. Banerjee: Sir, I rise on a point of order.

Mr. Speaker: What is the point of order?

Shri S. M. Banerjee: The point of order is this that the first part of my question could have been answered.

Mr. Speaker: The disallowance on my part has provoked this point of order?

Shri S. M. Banerjee: Nothing has provoked me. The only thing is that the small contribution of the businessmen has provoked me. My question is very simple, whether the main contribution has come from the low income group, and if so, what effective steps have been taken by Government to persuade the big businessmen to contribute more liberally.

Mr. Speaker: He has changed it now. He has come to persuasion.

The Minister of Finance (Shri Morarji Desai): The major part of the contribution is not from the low-income group. The major amount is from the richer classes, but the number of the other people is much larger.

बैरवा कोटा : रेडियो भवन में वैजयन्तीमाला का जो नाट्य हुआ था उस में कितना धन आया ?

अध्यक्ष महोदय : यह डिटेल की बात है ।

श्री यशपाल सिंह : क्या यह सच है कि डी० एम०, तहसीलदारों और एस० डी० एम० को हिदायतें जा रही हैं कि गांवों को बाकायदा बेबाक किया जाय, जैसे कि कर्जे से बेबाक होती है । और क्या यह भी सच है कि यू०पी० में यह रूल बना दिया गया है

कि किसानों से उन की लगान का २५ फ़ी-सदी नेशनलज डिफेंस फंड में वसूल किया जाय और मिलमालिकों को उन की इच्छा पर छोड़ दिया गया है कि वह दें यान दें, छोड़ दें या कयादा दें ?

श्री मोरारजी देसाई : ऐसा नहीं है कि दबाव डाला जाता है । बार-बार हम ने कहा है कि दबाव नहीं होना जाहिये । हर एक को लिखा गया है इस तरह से ।

श्री यशपाल सिंह : क्या कोई इस तरह का रूल बनाया गया है ?

श्री मोरारजी देसाई : ऐसा कोई रूल मुझे मालूम नहीं है ।

श्री रामेश्वरानन्द : जिस तरह से मेरे मित्र ने बतलाया, क्या ऐसी बात नहीं है कि हर जिले . . .

अध्यक्ष महोदय : जो चीज़ मिनिस्टर साहब को मालूम नहीं है और स्वामी जी को मालूम है उस को यहां बतलाने की ज़रूरत नहीं है । इस वक्त माननीय सदस्य वही पूछें जो कि मिनिस्टर साहब को मालूम है ।

श्री रामेश्वरानन्द : मैं तो वही जानना चाहता था लेकिन आपने मुझे बोलने का मौका ही नहीं दिया । म जानना चाहता था कि क्या सरकार को इस बात का ज्ञान है कि पंजाब में किसी जिले में १ रुपये कीला, किसी में २ रुपये कीला और किसी में ३ रुपये कीला इस मद में दिया गया है ?

श्री मोरारजी देसाई : मुझे मालूम नहीं है कि इस तरह से कहीं लगाया गया है ।

Shri P. Venkatasubbaiah: May I know whether it is a fact that the Nizam of Hyderabad has pleaded that he is too poor to contribute to the National Defence Fund, and if so, whether such a communication has been received by this Government?

Shri Morarji Desai: I do not know of any such communication myself.

श्री गु० सिं० मुसाफिर : सवाल के पार्ट (क) के बारे में जो माननीय मन्त्री महोदय ने बतलाया है कि टोटल फिगर्स क्या हैं, उस सम्बन्ध में क्या मैं जान सकता हूं कि स्टेटवाइज़ फिगर्स क्या हैं, कितना सोना आया है और कितना रुपया आया है ?

अध्यक्ष महोदय : उस को बतलाने की ज़रूरत नहीं है ।

श्री विभूति मिश्र : क्या यह सही हैकि कुछ ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि इमरजेंसी ख़त्म हो गई है और अब पैसा देने की ज़रूरत नहीं है ? यदि ऐसा है तो सरकार इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही कर रही है ?

श्री मोरारजी देसाई : इस के लिए हम किसी के ऊपर कार्रवाई तो नहीं कर रहे हैं लेकिन यह कहना गलत है कि इमर्जेंसी ख़त्म हो गई है ।

श्री गु० सिं० मुसाफिर : मेरे सवाल का जवाब नहीं मिला ।

अध्यक्ष महोदय : मैं ने उस की इजाज़त नहीं दी थी कि स्टेट्स के अलग अलग फ़िगर्स दिये जायें । माननीय सदस्य के कहने का मतलब यह था कि पंजाब ने ज्यादा दिया है ।

Mr. Speaker: He wants to say that Punjab has contributed most.

श्री गु० सिं० मुसाफिर : जी, मेरा यह मतलब नहीं था । मैं तो यह जानना चाहता था कि किस स्टेट से बहुत कम आया है ।

Mr. Speaker: Order, order. He can ask privately.

Shri Bhagwat Jha Azad: Since wild allegations amounting to an insult to public spontaniety in contributing such funds are being thrown up, may I know if in any case it has been established after enquiry that pressure was brought for this purpose?

Shri Morarji Desai: There is no question of insulting public spontan-

iety. Some allegations are made. Nobody says that the whole amount is collected by pressure, but some may have been made. I cannot deny that. There may have been some pressure.

Shrimati Savitri Nigam: The hon. Minister said that the States had been allowed to keep some money. May I know what is the percentage of money kept by the State for expenditure?

Shri Morarji Desai: There is no percentage fixed. A lakh of rupees is kept in the imprest account so that if there is any expenditure it is met from that fund and the account is sent here. They have no authority to spend anything as they like. Money is required for certain items like advertisements or thing like that; it is not needed on a largescale for conveyance allowances or things like that.

Shri Hari Vishnu Kamath: Arising out of the reply to part (b) of the question, has the attention of the Government been drawn to a circular issued by the Commissioner of Income-tax Hyderabad saying that "all members of the staff who have not donated to this fund should"—mark the word 'should'—"forthwith pay one day's salary, and those who have paid less than one day's salary"—mark these words again, Sir,—"should pay up the difference immediately". In the face of this circular, does the Government still maintain that undue pressure or compulsion is not being exercised in collections for this fund?

Mr. Speaker: They have not said so. Even the Prime Minister replied yesterday that some cases have been brought to their notice and that they would make enquiries and issue necessary instructions.

Shri Hari Vishnu Kamath: What action has been taken, if they know about this circular?

Shri Morarji Desai: I do not know of this circular.

Shri Hari Vishnu Kamath: I will lay it on the Table if you want it.

Shri Iqbal Singh: When this collection was going on some areas which contributed some money to this Fund said that it was for the purchase of aeroplanes and other items for Defence. Will Government consider the wishes of these donors?

Shri Morarji Desai: Yes, Sir.

Shri Inder J. Malhotra: Is the hon. Minister in a position to say whether all the ex-rulers of India have contributed to the Fund?

Shri Morarji Desai: I think they have—more than 75 per cent. of them—contributed ten per cent. of their privy purses, as far as I know.

Shri A. P. Jain: I heard the Finance Minister say that the richer people contributed more quantitatively than the poorer people. Has he got any figures or statistics to support it and will he give it now or later on?

Shri Morarji Desai: I have no statistics as such. I applied my common sense as the hon. Member applies his in seeing this matter. Like that I have applied my common sense. I have seen the figures from which I can say that quantitatively out of Rs. 50 or 47 crores which has been received, a larger part comes from the well-to-do people. That is what I said. I did not say that the number was large.

Mr. Speaker: Next question.

Upper Sileru Hydro Electric Project

*162. { **Shri Yashpal Singh:** + **Shri Bishanchander Seth:**

Will the Minister of **Irrigation and Power** be pleased to refer to the reply given to Starred Question No. 466 on the 24th January, 1963, regarding Upper Sileru Hydro Electric Project and state:

(a) whether the matters relating to certain bottlenecks like supply of machinery and steel have since been looked into by Government; and

(b) if so, the action taken in the matter?